''समाज–भूषण'' स्व. श्री जसवंतमलजी सेठिया–एक सर्वांगीण व्यक्तित्व

–डॉ. सोहनराज तातेड़

कौन कितना जीता है यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं, जितना कौन कैसे जीता है, यह महत्त्वपूर्ण है। भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य जीवन मिलना अति दुर्लभ है। चार बातें मिलना अति कठिन है–मनुष्य जीवन, धर्म का श्रवण, धर्म में श्रद्धा, धर्म को चरित्र में ढालना। भाग्य से मनुष्य जीवन तो मिल जाता है लेकिन उसका उपयोग स्व–पर चरित्र निर्माण में बहुधा नहीं हो पाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज में जीने के लिए सामुदायिक चेतना का विकास जरूरी है। सामाजिक जीवन में शांतिपूर्ण–सहवास, सामंजस्य, सौहार्द, भाईचारा, मैत्री आदि गुण अति आवश्यक है। इसके बिना हमारा सामाजिक जीवन अपूर्ण एवं अशांत रहता है। वही व्यक्ति समाज को सेवा दे सकता है जो अपने आप में सेवा की भावना रखता है। व्यक्ति के स्वार्थों से ऊपर उठने पर ही सेवा भावना का दायरा प्रारम्भ होता है। जो स्वयं के साथ–साथ दूसरों के लिए जीता है, यह महत्त्वपूर्ण बात है। इसे परमार्थ की चेतना कहते हो। चेतना दो प्रकार की होती है–स्वार्थ की चेतना, परमार्थ की चेतना। सामाजिक प्राणी के लिए स्वार्थ भी जरूरी है, क्योंकि उसके स्वयं का शरीर है, परिवार है। परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेदारी भी व्यक्ति स्वयं पर है। लेकिन अपने परिवार का भरण–पोषण कर शेष समय जो व्यक्ति मानवता के अभ्युदय के लिए लगाता है, वह उसकी परमार्थ चेतना का परिचायक है।

स्व. जसवंतमलजी सेठिया एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी थे। धर्म का श्रवण कर उसे चरित्र में ढालना यह उनकी विशेषता थी। वे स्व–पर चरित्र निर्माण पर बहुत जोर देते थे। आपकी सामुदायिक चेतना विकसित थी। आपका जीवन शांतिपूर्ण–सहवास, सामंजस्य, मैत्री एवं सद्भावना गुणों से ओतप्रोत था। आपमें कर्त्तव्य–निष्ठा, धर्म–निष्ठा, गुरु–निष्ठा एवं मानवीय–निष्ठा कूट–कूट कर भरी हुई थी। इन्हीं विशिष्ट गुणों के कारण ज्योतिपुंज आचार्यश्री तुलसी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ महासभा ने वर्ष 1968 में आपको **''समाज–भूषण''** से अलंकृत किया। गुरुदेव तुलसी ने आपको समाज का अजातशत्रु बताया। आप अपने गुरु के इंगित व आकार को भली भांति समझकर उनके दिशा–निर्देशों की पालना करने में हमेशा सक्रिय रहे। ब्याज के व्यवसाय में उपयुक्त ब्याज से अधिक लेना उन्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं था। **सेठियाजी प्रति वर्ष गुरुदर्शन को जाते तथा प्रति दिन सामायिक तथा त्याग पच्चखान उनका स्वभाव बन चुका था। रायपुर (म.प्र.) में ''अग्नि परीक्षा'' विवाद के समय विषम परिस्थितियों में वहां रहकर संघ सेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया।** उनका जीवन प्रामाणिक, चरित्रप्रधान तथा सेवाप्रधान था। श्री सेठिया साहब के जीवन के दो महत्त्वपूर्ण स्वप्न थे। एक गुरुदेव तुलसी को मद्रास लाना और दूसरा मद्रास में तेरापंथी सभा का भवन निर्माण करवाना। भाग्यशाली पुरुष वही होता है, जिसकी भावना सफल होती है। श्री सेठियाजी की दोनों भावनाएँ सफल हुई। सेठियाजी ने **''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया''** की युक्ति को चरितार्थ किया।

आप मानवीय एकता व सामाजिकता के दायित्व को बखूबी निभाते थे। आपके भाग्य ने आपको समृद्धि प्रदान की लेकिन आप उस समृद्धि को अकेले नहीं भोग कर बांटकर चलते। आप धन का सदुपयोग करना जानते थे। ये संस्कार आपको वंशानुगत मिले थे। आपके दरबार में सामाजिक सेवा के लिए जो भी सहयोग के लिए जाता, वे उसे निराश नहीं लौटाते। कई शीर्षस्थ संस्थाओं–तंरापंथी महासभा, श्री एस.एस. जैन एज्यूकेशन सोसायटी, जैन मेडिकल रिलिफ सोसायटी, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी मानव हितकारी संघ राणावास, तमिलनाडु सरकार द्वारा गठित भगवान महावीर निर्वाण समिति आदि में आप सक्रिय पदाधिकारी रहे। आपकी परमार्थ चेतना विकसित थी, तभी आप परमार्थ के कार्यों में पूर्ण निष्ठा रखते थे। आपका दृष्टिकोण समन्वयवादी था। लेकिन दोष पाये जाने पर अंगुली–निर्देश से भी नहीं हिचकिचाते। सिद्धान्तों के विपरीत आचरण एवं

कर्त्तव्य–हीनता आपको बिल्कुल पसंद नहीं थी। आपका दृष्टिकोण विशाल था। आप भूतकाल से प्रेरणा लेकर वर्तमान को निर्धारित करते तथा भविष्य की योजना बनाते थे। श्री जसवंतमलजी सेठिया एक कुशल प्लानर थे। किसी योजना के निर्माण व संचालन में लोग आपसे परामर्श लेते थे। आपकी मानसिकता थी कि लक्ष्य बहुत बड़ा होना चाहिए ताकि उसकी क्रियान्विति भी बड़े स्तर पर हो। आप एक निर्भीक वक्ता एवं कुशल प्रबंधक भी थे। पारिवारिक जीवन में आप सभी को साथ लेकर चलते थे। छोटे–बड़े सभी के विचारों को आदर देते थे। आपके जीवन में अनेकांत अवतरित था। आचार्य तुलसी द्वारा रचित **"आग्रह–हीन गहन चिंतन का द्वार हमेशा खुला रहे"** युक्ति को आपने चरितार्थ किया।

कुल मिलाकर स्व. सेठियाजी एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी थे। आपका मनुष्य जीवन सार्थक हुआ। आपने एक–एक क्षण चरित्रवान व्यक्तित्व को जीया। आप सिद्धान्त एवं परिणति दोनों में संतुलन रखते थे। आप स्वयं में एक अच्छे व्यक्ति, अच्छे पारिवारिक सदस्य, अच्छे सामाजिक एवं राष्ट्रीय सदस्य थे। आपका जीवन सभी के लिए फलदायक एवं अनुकरणीय रहा। 29 दिसम्बर 1996 को श्री सेठियाजी की पुण्य आत्मा स्वर्ग सिधार गई। हम आपकी आत्मा की उत्तरोतर आध्यात्मिक प्रगति के लिए मंगल कामना करें तथा उनके गुणों का अनुकरण करने का संकल्प लें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। दिवंगत आत्मा को शत्–शत् नमन।

शुभेच्छु,

डॉ. सोहनराज तातेड़
वानप्रस्थाश्रम साधक
संयोजक, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाडनूँ (राज.)
सलाहकार–जैन विश्वभारती एवं
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ (राज.)
सेवानिवृत्त अधीक्षण अभियंता, जलदाय विभाग, राजस्थान सरकार

प्रतिष्ठा में,

श्रीमान् एस.पी. दुबे साहिब,
अध्यक्ष
अखिल भारतीय दर्शन परिषद्
जबलपुर।

विषयः–परिषद् के तत्त्वावधान में जैन परम्परा पर व्याख्यानमाला का प्रारंभ।

सन्दर्भः–आपका प्रस्ताव पत्रांक दिनांक 27–12–07.

महोदयजी,

परिषद् के तत्त्वावधान में जैन परम्परा पर आजीवन प्रतिवर्ष व्याख्यानमाला प्रारंभ किये जाने का प्रस्ताव आपके उपरोक्त संदर्भित पत्र द्वारा प्राप्त हुआ। इसके लिए आपको धन्यवाद एवं साधुवाद। आपके अनुरोध पर ड्राफ्ट सं. ..... दिनांक ..... राशि ..... संलग्न कर निवेदन है कि हमारी निम्न शर्तें जिनकी आपने मौखिक स्वीकृति दे दी है, कृपया लिखित में शीघ्र स्वीकृत कर हमें भिजवायें, ताकि भविष्य में हमें किसी प्रकार की परेशानी न होः–

1. व्याख्यानमाला का नाम मेरे माता–पिता का **''स्व. चम्पादेवी स्व. मुल्तानमलजी तातेड़, जसोल (राजस्थान) स्मृति व्याख्यानमाला''** रखना होगा।
2. व्याख्यानमाला आजीवन प्रतिवर्ष निश्चित रूप से आयोजित करनी होगी, उसमें किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होगा। व्याख्यानमाला के आयोजन की पूर्व सूचना हमें देनी होगी ताकि हम भी उसमें सहभागी बन सकें।
3. व्याख्यानमाला की समाप्ति पर उसका विवरण मय विद्वानों द्वारा प्रस्तुत आलेखों की एक–एक प्रति हमारे ज्ञानवर्धन हेतु आपको हमें भेजनी होगी।

आशा है आप मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए उपरोक्तानुसार स्वीकृति–पत्र निम्न पते पर शीघ्र हमें भिजवाएँगे। पत्राचार का हमारा निम्न पता स्थायी रहेगा।

आपके प्रति आदर भाव सहित,

भवदीय

(डॉ. सोहनराज तातेड़)
G–8, ''मुल्तान कुंज''
भगत की कोठी विस्तार,
जोधपुर (राज.)

संलग्न–डी.डी. उपरोक्तानुसार